



2027

काव्य खंड

पद

(रेंदास)

Lecture - 01

Class - 9th

HINDI

By- अदिति मैम



पाठ सूची

रैदास के पद

- 1 लेखक परिचय
- 2 पद *line to line*
- 3 लघु उत्तरीय प्रश्न

संत रविदास (रैदास)

रैदास नाम से प्रसिद्ध संत रविदास का जन्म काशी (वाराणसी) में हुआ था। उनका जीवनकाल 15वीं शताब्दी (सन् 1388-1518) माना जाता है। रैदास संत कवियों में प्रमुख स्थान रखते हैं। उन्होंने बाहरी आडंबरों का विरोध करते हुए मन की पवित्रता और आंतरिक भक्ति को ही सच्चा धर्म माना।

रैदास ने अपनी काव्य-रचनाओं में सरल और सहज ब्रजभाषा का प्रयोग किया है, जिसमें अवधी, राजस्थानी, खड़ी बोली तथा उर्दू फारसी के शब्दों

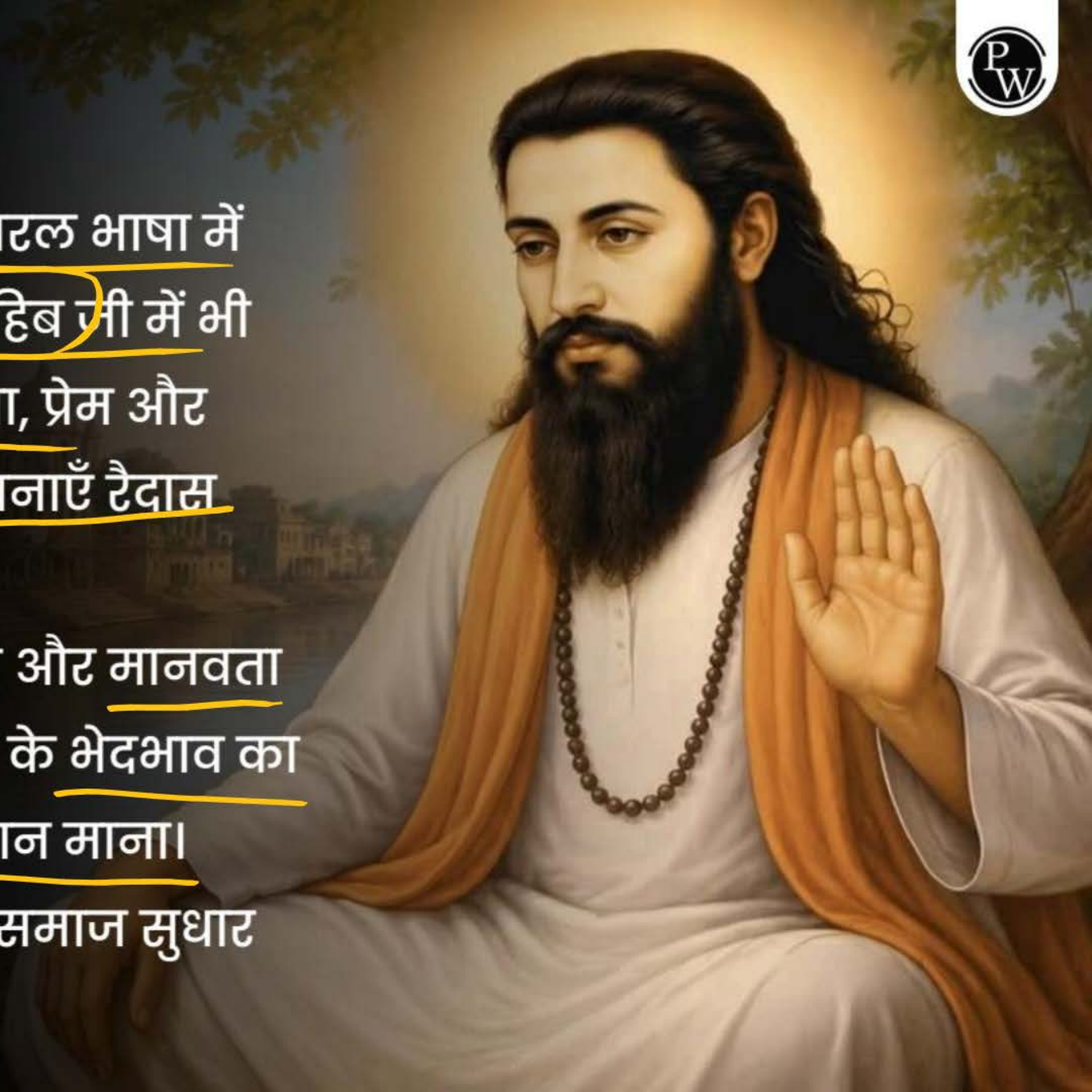


संत रविदास (रैदास)



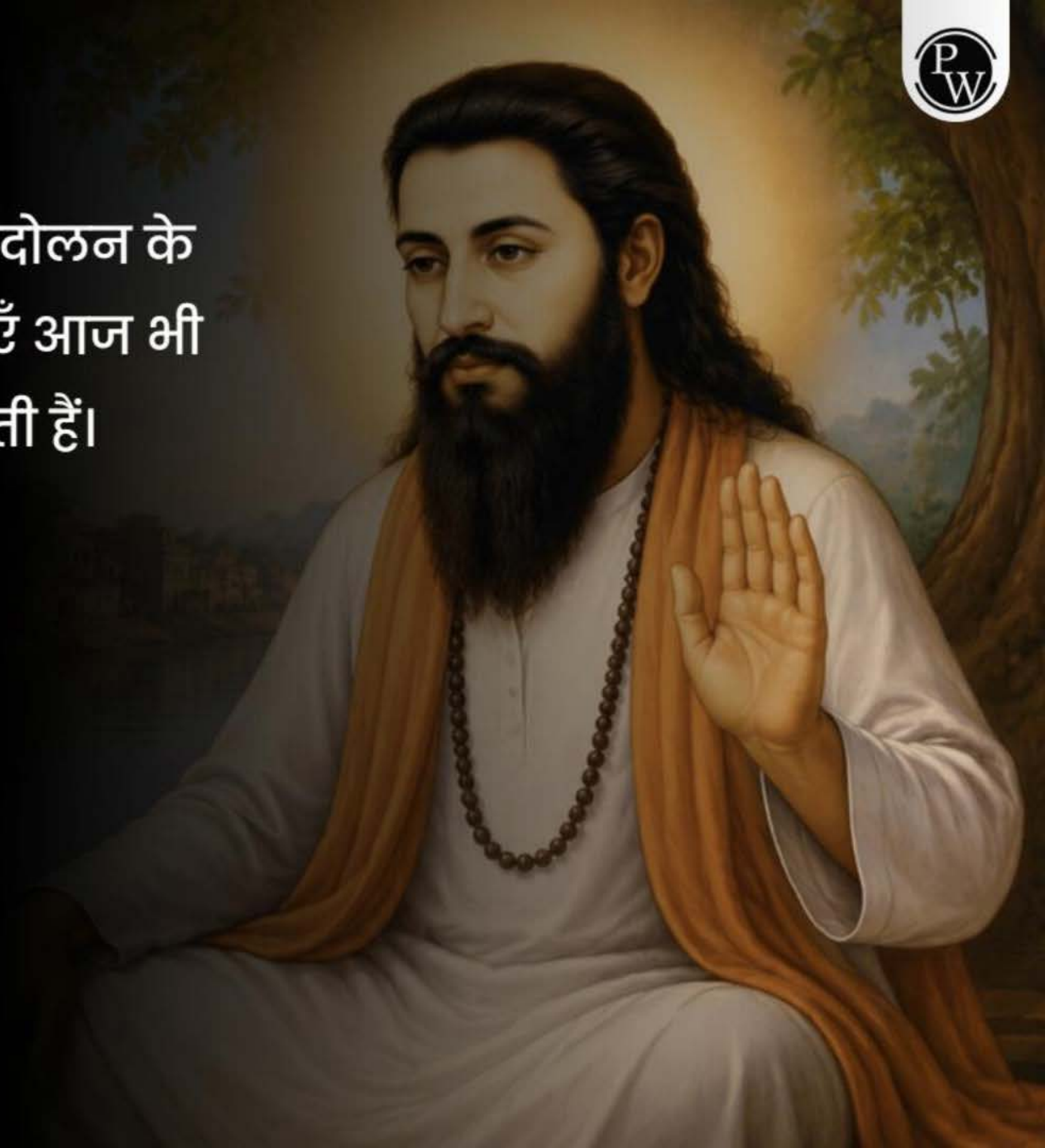
का भी समावेश मिलता है। उनकी सरल भाषा में लिखी भक्ति रचनाएँ श्री गुरु ग्रंथसाहिब जी में भी संकलित हैं और वे आज भी समानता, प्रेम और भाईचारे का संदेश देती हैं। उनकी रचनाएँ रैदास बानी में संग्रहित हैं।

उनका साहित्य सामाजिक समानता और मानवता का संदेश देता है। उन्होंने जाति-पाति के भेदभाव का विरोध किया और सभी को एक समान माना।
उनकी वाणी में भक्ति के साथ-साथ समाज सुधार



संत रविदास (रैदास)

की भावना भी दिखाई देती है। वे भक्ति आंदोलन के प्रमुख संतों में गिने जाते हैं। उनकी शिक्षाएँ आज भी लोगोंको सादगी और प्रेम का मार्ग दिखाती हैं।





पद - 1



आदत लगाना ।

अब कैसे छूटे राम रट लागी।

प्रभु जी तुम चंदन हम पानी, जाकी अंग-अंग बास समानी। — समाना

प्रभु जी तुम घन बन, हम मोरा, जैसे चितवत चंद चकोरा ।

प्रभु जी तुम दीपक, हम बाती, जाकी जोति बरै दिन राती।

प्रभु जी तुम मोती, हम धागा, जैसे सोने मिलत सुहागा।

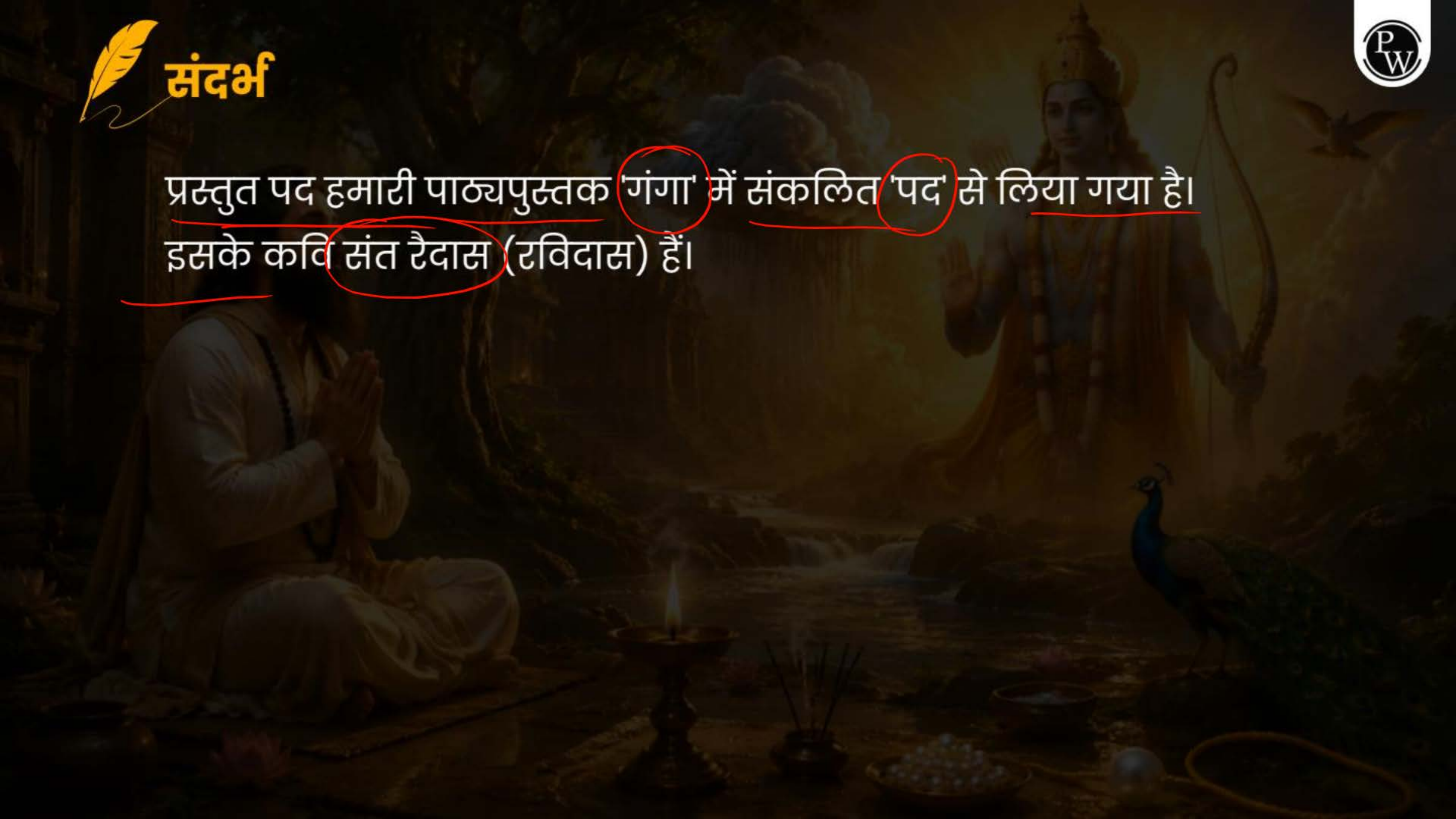
प्रभु जी तुम स्वामी, हम दासा, ऐसी भगति करै रैदासा ।

देखना
पक्षी

पूरी

- **रट लागी** – लगातार स्मरण होना
- **चंदन** – सुगंधित लकड़ी
- **बास** – सुगंध
- **घन** – बादल
- **मोरा** – मोर
- **चकोरा** – चाँद को देखने वाला पक्षी
- **दीपक** – दिया
- **मोती** – मोती
- **धागा** – सूत
- **स्वामी** – मालिक
- **दासा** – सेवक
- **भगति** – भक्ति
- **बाती** – दीये की बत्ती
- **जोति** – प्रकाश

प्रस्तुत पद हमारी पाठ्यपुस्तक 'गंगा' में संकलित 'पद' से लिया गया है।
इसके कवि संत रैदास (रविदास) हैं।



-संत रैदास जी कहते हैं कि अब उनके मन में भगवान राम का नाम इस प्रकार बस गया है कि वह उनसे अलग नहीं हो सकता, वे हर समय उनका स्मरण करते रहते हैं। वे भगवान से कहते हैं कि हे प्रभु ! आप चंदन के समान हैं और मैं पानी के समान हूँ, जैसे पानी में चंदन मिलकर अपनी सुगंध हर अंग में फैला देता है, वैसे ही आपका प्रभाव मेरे जीवन के प्रत्येक भाग में समा गया है। आगे वे कहते हैं कि आप बादल के समान हैं और मैं मोर हूँ,

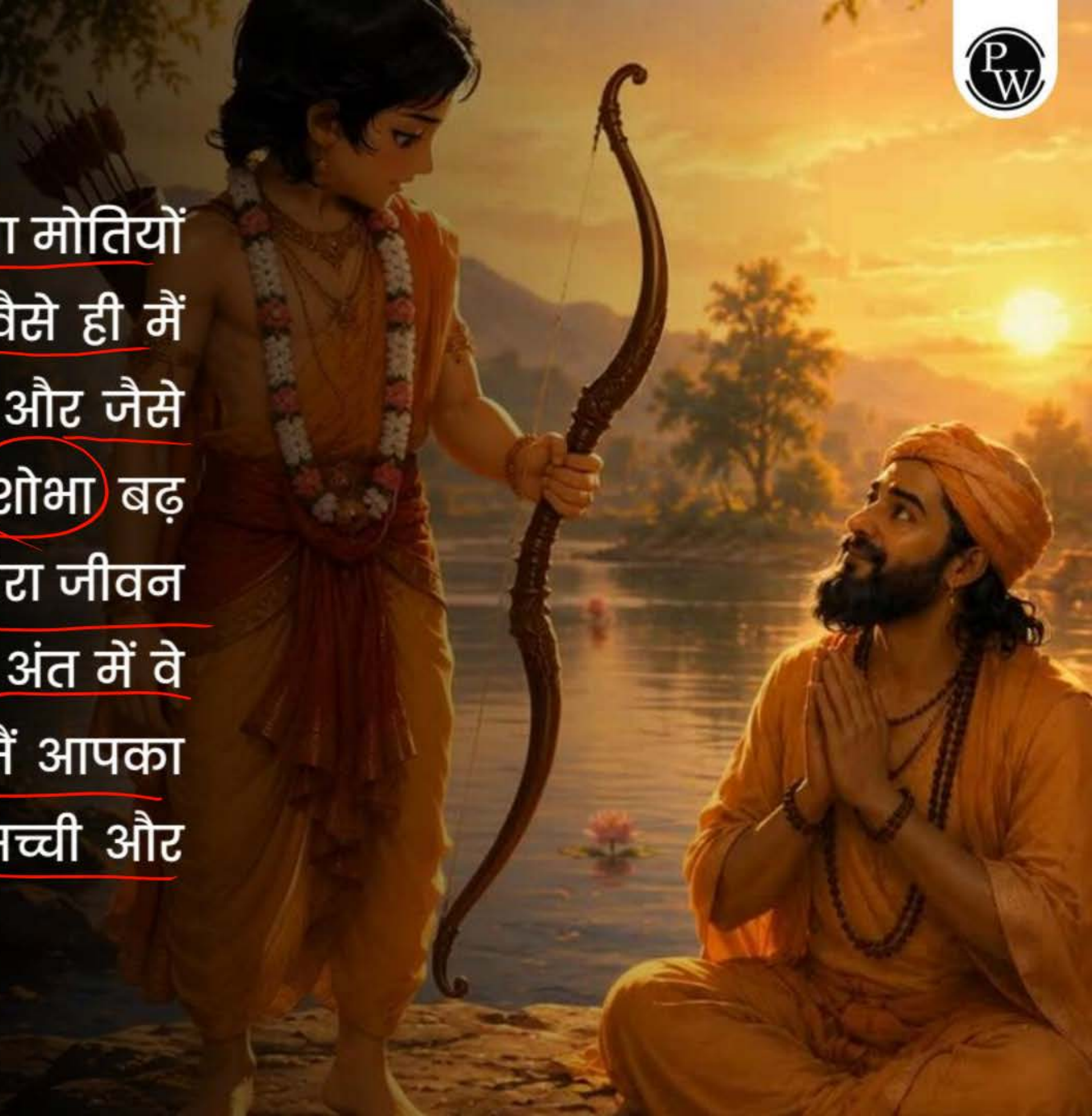


जैसे मोर बादलों को देखकर प्रसन्न होकर नाच उठता है, वैसे ही मैं आपको देखकर आनंदित हो जाता हूँ, और जैसे चकोर पक्षी चाँद को प्रेमपूर्वक निहारता रहता है, वैसे ही मेरा मन भी हमेशा आपकी ओर लगा रहता है। वे कहते हैं कि आप दीपक हैं और मैं बत्ती हूँ, जैसे दीपक और बत्ती मिलकर दिन-रात प्रकाश देते हैं, उसी प्रकार मैं हर समय आपकी भक्ति में लीन रहता हूँ और मेरे जीवन में आपकी कृपा का प्रकाश बना रहता है। आगे वे कहते हैं कि





आप मोती हैं और मैं धागा हूँ, जैसे धागा मोतियों को पिरोकर सुंदर माला बनाता है, वैसे ही मैं आपसे जुड़कर पूर्णता प्राप्त करता हूँ, और जैसे सोने में सुहागा मिलाने से उसकी शोभा बढ़ जाती है, वैसे ही आपके साथ जुड़कर मेरा जीवन और भी सुंदर और श्रेष्ठ बन जाता है। अंत में वे कहते हैं कि आप मेरे स्वामी हैं और मैं आपका दास हूँ, और रैदास जी इसी प्रकार सच्ची और समर्पित भक्ति करते रहते हैं।



- इस पद में भक्ति भाव का सुंदर वर्णन किया गया है।
- कवि ने अनेक उपमाओं (तुलनाओं) का प्रयोग किया है, जिससे भाव स्पष्ट होता है। भाषा सरल, मधुर और भावपूर्ण है।
- भगवान और भक्त के बीच अटूट संबंध को दर्शाया गया है।
- यह पद निर्गुण भक्ति धारा की विशेषता को प्रकट करता है।



पद - 2



लौड़ना / दोड़ना

कमल रूपी चरण

किसने

जौड़ना

जो तुम तोरो राम मैं नहिं तोरो, तुम सौ तोरि कवन सौं जोरों।

तीरथ बरत न कसँ अंदेसा, तुम्हरे चरण कमल एक भरोसा।

जहाँ जहाँ जाओ तुम्हरी पूजा, तुम सा देव ओर नहिं दूजा मैं

मैं अपनो मन हरि से जोरौ हरि सो जोरि सबन सो तोरों। सखी

सबही पहर तुम्हारी आसा, मन क्रम वचन कहै रैदासा।

हर समय

आशा

मन क्रम वचन

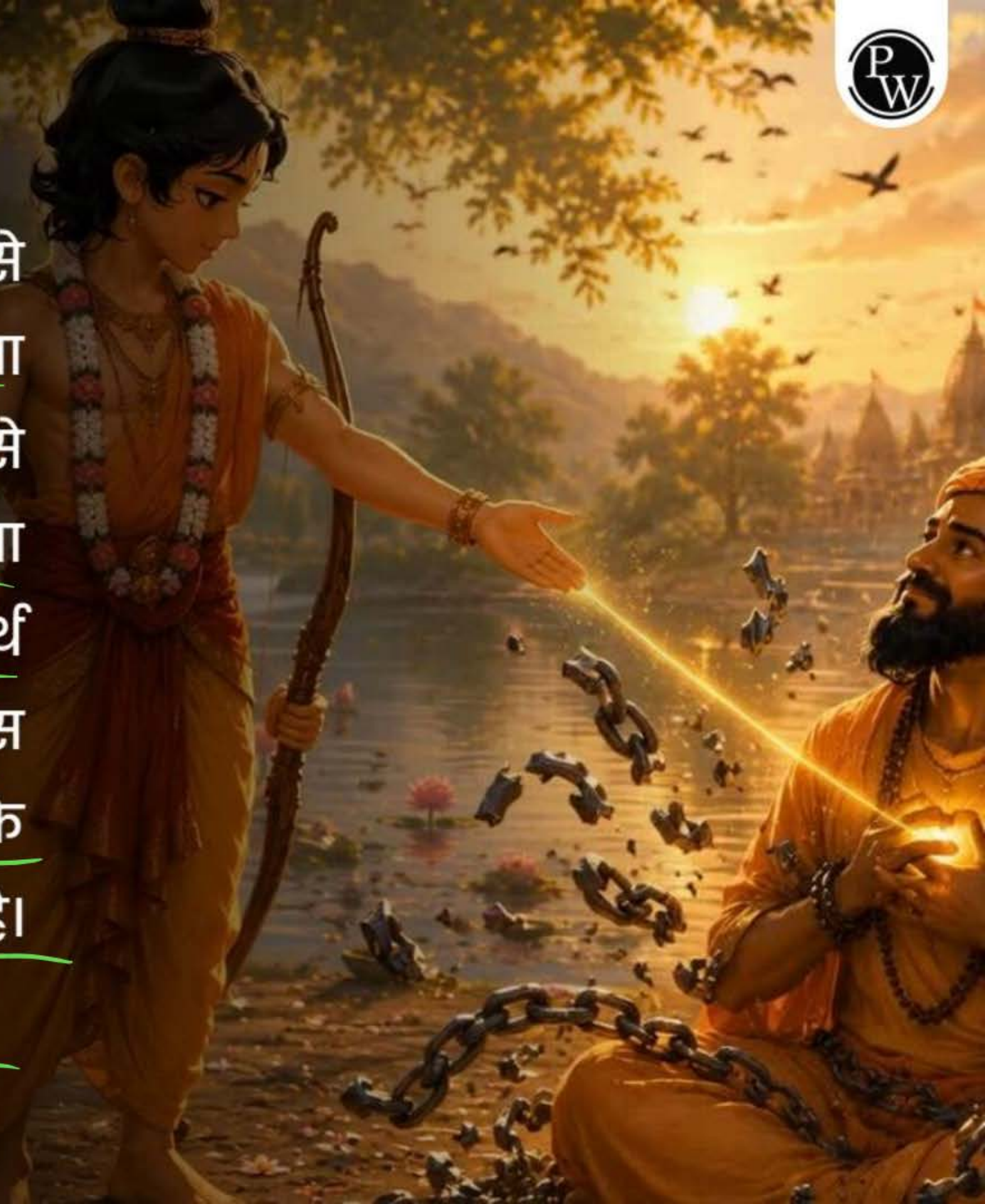


- **तोरौ** - तोड़ूँ / छोड़ूँ
- **जोरौ** - जोड़ूँ / संबंध बनाऊँ
- **तीरथ** - तीर्थ यात्रा
- **बरत** - व्रत (उपवास)
- **अंदेसा** - चिंता / भय
- **भरोसा** - विश्वास

- **सबन** - सब से
- **पहर** - समय / हर समय
- **आसा** - आशा
- **मन क्रम वचन** - मन, कर्म और वचन
- **दूजा** - दूसरा
- **अपनो** - अपना



संत रैदास जी कहते हैं कि हे प्रभु ! यदि आप मुझसे अपना संबंध तोड़ भी दें, तब भी मैं आपसे अपना संबंध नहीं तोड़ सकता, क्योंकि यदि मैं आपसे अलग हो जाऊँ तो फिर मैं किससे अपना संबंध जोड़ूंगा। वे आगे कहते हैं कि उन्हें न तो तीर्थ यात्रा करने की चिंता है और न ही व्रत-उपवास करने का कोई भय, क्योंकि उन्हें केवल आपके चरण कमलों का ही एकमात्र सहारा और विश्वास है। वे कहते हैं कि वे जहाँ जहाँ भी जाते हैं, वहाँ आपकी





व्याख्या



ही पूजा करते हैं, क्योंकि उनके लिए आप
जैसा कोई दूसरा देवता नहीं है। आगे वे कहते
हैं कि उन्होंने अपने मन को भगवान से जोड़
लिया है और भगवान से जुड़कर उन्होंने संसार
के अन्य सभी संबंधों को तोड़ दिया है। वे कहते
हैं कि दिन-रात हर समय उन्हें केवल आप ही
से आशा रहती है और वे अपने मन, कर्म और
वचन से यही बात कहते हैं कि वे पूरी तरह
भगवान की भक्ति में समर्पित हैं।



- इस पद में अटूट भक्ति और दृढ़ विश्वास का वर्णन है।
- कवि ने भगवान के प्रति पूर्ण समर्पण को दर्शाया है।
- भाषा सरल, भावपूर्ण और प्रभावशाली है।
- इसमें एकेश्वरवाद (एक ही भगवान में विश्वास) की भावना व्यक्त हुई है।
- “मन, कर्म, वचन” का प्रयोग भक्ति की पूर्णता को दर्शाता है।

"अब कैसे छूटै राम रट लागी" पंक्ति का भाव है?

- ☒ 1 नाम उच्चारण की कठिनाई
- ☒ 2 नाम रटकर याद करना
- ☒ 3 आराध्य का नाम जपना
- ☐ 4 मित्रों का नाम रटना

"प्रभु जी तुम चंदन हम पानी" पंक्ति में आराध्य और भक्त का संबंध किस रूप में व्यक्त हुआ है?

- 1 एकाकार और समरूप
- 2 तरल और तीव्र सुगंध
- 3 आश्रय और आश्रित
- 4 द्रव और ठोस

"तुम दीपक, हम बाती" से रैदास का क्या भाव है?

- 1 दीपक और बाती का कोई मेल नहीं होता है।
- 2 दीपक बिना बाती भी जल सकता है।
- 3 भक्त आराध्य से अधिक महत्वपूर्ण है।
- 4 भक्त का आराध्य से मेल जीवन को आलोकित करता है।

"जो तुम तोरी राम मैं नहिं तोरी" पंक्ति में रैदास का क्या आशय है?

- 1 परोपकारी भक्ति भाव
- 2 आराध्य से अटूट संबंध
- 3 सांसारिक मोह
- 4 कर्मकांड पर बल

"तीरथ बरत न करूँ अंदेसा" पंक्ति से आप क्या समझते हैं?

- 1 तीर्थ और व्रत आवश्यक नहीं हैं।
- 2 तीर्थ और व्रत सब आवश्यक हैं।
- 3 तीर्थ जाने से मुक्ति निश्चित है।
- 4 आराध्य के चरणों में सच्चा आश्रय है।

सर्वव्यापक ईश्वर की अवधारणा किस पंक्ति में व्यक्त होती है?

- 1 "जहाँ जहाँ जाओ तुम्हरी पूजा "
- 2 "जाकी जोति बरै दिन राती"
- 3 "तुम दीपक, हम बाती"
- 4 "तीरथ बरत न करूँ अंदेसा "

"प्रभु जी तुम घन बन, हम मोरा, जैसे चितवत चंद चकोरा।"



अर्थ: इस पंक्ति में कवि रैदास जी भगवान से कहते हैं कि आप बादल के समान हैं और मैं मोर के समान आनंदित हूँ। जैसे मोर बादल को देखकर प्रसन्न होकर नाच उठता है, उसी प्रकार मैं आपको देखकर भी हमेशा हो आपकी जाता हूँ। ओर साथ लगा ही, जैसे चकोर पक्षी प्रेम से चाँद को निहारता रहता है, वैसे ही मेरा मन रहता है।

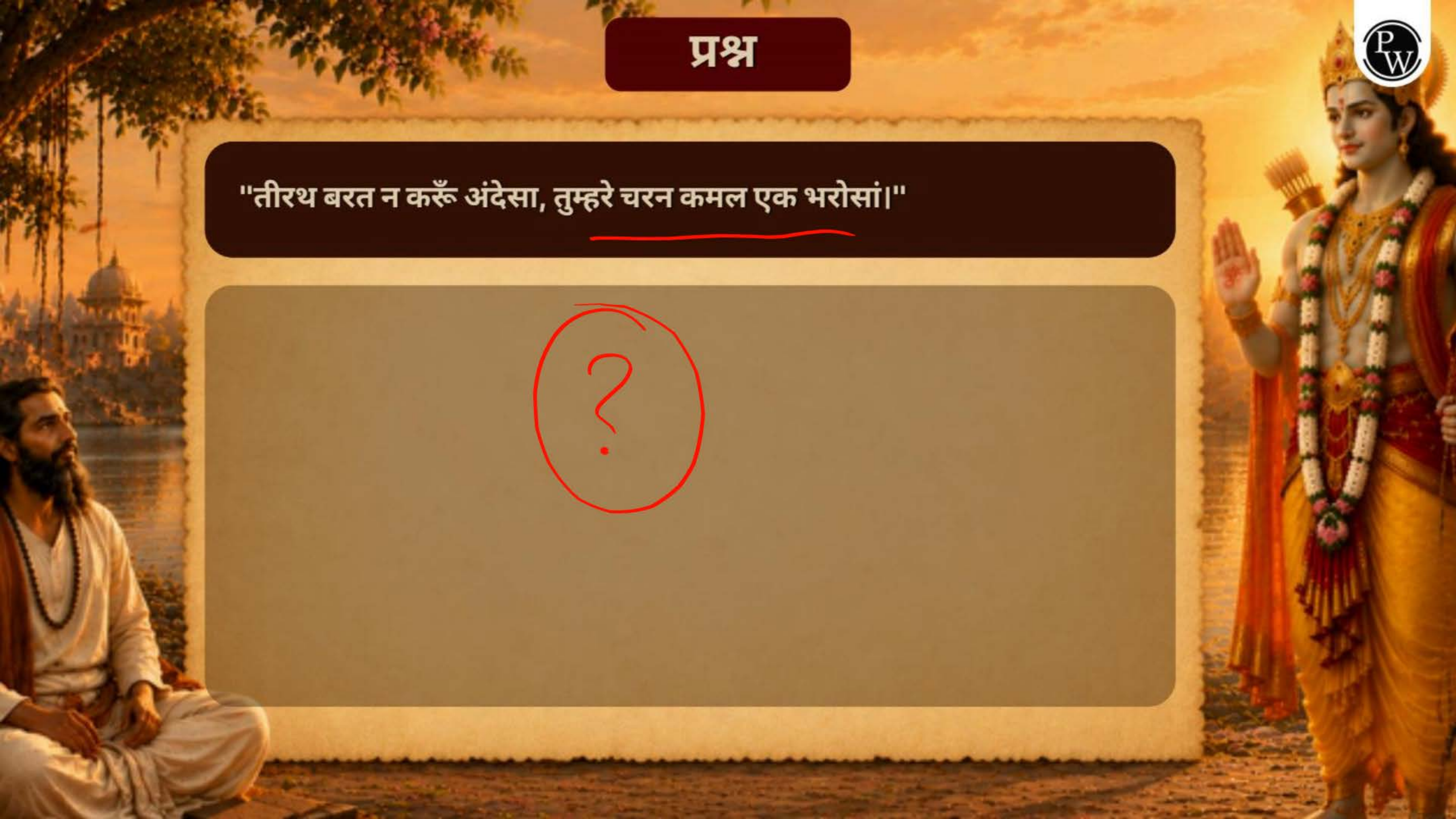
भाव : इस पंक्ति में कवि ने भगवान के प्रति अपने गहरे प्रेम और आकर्षण को व्यक्त किया है। वे दिखाते हैं कि भक्त का मन अपने आराध्य के बिना नहीं रह सकता और उसे देखकर ही आनंद प्राप्त करता है। यहाँ भक्त और भगवान के बीच प्रेमपूर्ण और अटूट संबंध को सुंदर उपमाओं के माध्यम से बताया गया है।



प्रश्न



"तीरथ बरत न करूँ अंदेसा, तुम्हरे चरन कमल एक भरोसा।"



प्रश्न



जो तुम तोरौ राम मैं नहिं तोरौ" पंक्ति में रैदास की अपने आराध्य में अटूट निष्ठा का भाव है। इससे आप क्या समझते हैं? विस्तार से लिखिए।

इस पंक्ति से यह समझ आता है कि संत रैदास जी की भगवान के प्रति भक्ति अत्यंत गहरी और अटूट है। वे कहते हैं कि यदि भगवान उनसे संबंध तोड़ भी दें, तब भी वे भगवान से अपना संबंध कभी नहीं तोड़ेंगे। इससे उनकी सच्ची निष्ठा, समर्पण और प्रेम प्रकट होता है। वे भगवान को अपने जीवन का सबसे महत्वपूर्ण आधार मानते हैं और उनके बिना किसी अन्य से संबंध जोड़ने की कल्पना भी नहीं कर सकते। यह हमें सिखाता है कि सच्ची भक्ति में स्थिरता, विश्वास और पूर्ण समर्पण होना चाहिए, चाहे परिस्थितियाँ कैसी भी हों।



प्रश्न



रैदास ने तीर्थ और व्रत के स्थान पर किस साधन को भक्ति का प्रमुख आधार माना है? आपके विचार से भक्ति के क्या आधार हो सकते हैं?

संत रैदास जी ने तीर्थ यात्रा और व्रत-उपवास के स्थान पर भगवान के चरणों में सच्चे विश्वास और समर्पण को भक्ति का मुख्य आधार माना है। वे मानते हैं कि बाहरी कर्मकांडों से अधिक महत्वपूर्ण है मन से की गई सच्ची भक्ति।

मेरे विचार से भक्ति के मुख्य आधार हो सकते हैं-ईश्वर में अटूट विश्वास, सच्चा प्रेम, मन की पवित्रता, निस्वार्थ भाव, और अच्छे कर्म। जब मन, वचन और कर्म से भगवान का स्मरण किया जाता है, तभी भक्ति सच्ची और सफल होती है।



प्रश्न



दोनों पदों में भक्त और आराध्य के संबंध को किन-किन प्रतीकों/उपमाओं से व्यक्त किया गया है? लिखिए।

दोनों पदों में संत रैदास जी ने भक्त और भगवान के संबंध को कई सुंदर उपमाओं के माध्यम से व्यक्त किया है। उन्होंने भगवान को चंदन और स्वयं को पानी बताया है, जिससे दोनों के एकाकार होने का भाव प्रकट होता है। भगवान को बादल और स्वयं को मोर बताया है, जिससे आनंद और आकर्षण का भाव व्यक्त होता है। चकोर और चाँट की उपमा से प्रेम और एकाग्रता दिखाई गई है। दीपक और बत्ती के माध्यम से जीवन के प्रकाश का संकेत मिलता है। मोती और धागा की उपमा से अटूट संबंध और सुंदरता का भाव प्रकट होता है। इन सभी प्रतीकों से यह स्पष्ट होता है कि भक्त और भगवान का संबंध गहरा, प्रेमपूर्ण और अविभाज्य है।





सारांश

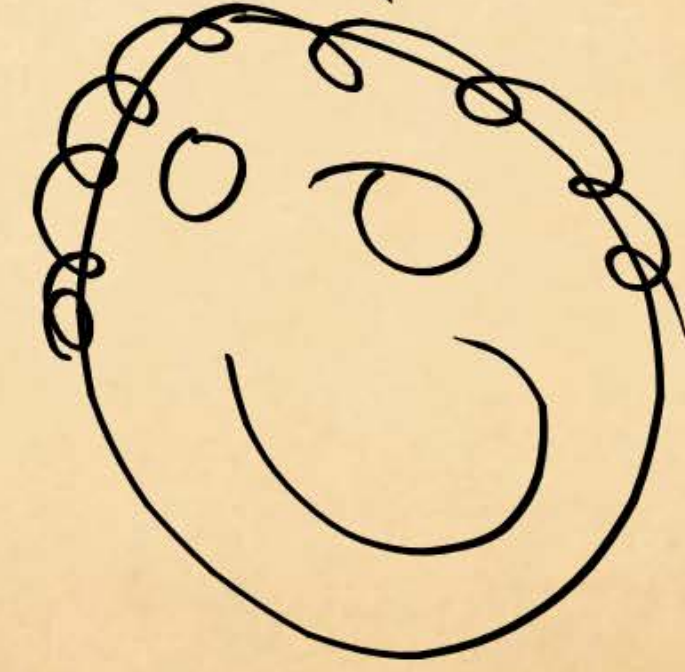




गृहकार्य

सारांश लिखकर

आना।



Thank you Cuties

